

हागकाया लविद्यटिविद्यटिन कन्दु (१) षष्ठर्तदाव कन्दुक्रमसिद्धि ॥ कन्दुस
 वन्दुखण्डुसदीयावथा कखं उरुलकाय ॥ ५॥ कखण्डुनका (५) खण्डुसयायाव (५)
 (५) षष्ठर्तदाव कन्दुक्रमसिद्धि ॥ १०० ॥ धनरागकाया लविद्यटिविद्यटिन खण्डुस
 दाववर्तुलसिद्धि ॥ ॥ शुक्तिनवद्यानिगलागमिन्दा रूपाणि वन्द्यानि थय ४ खनन्दे ४
 निध्या शुक्ल नवापाद्यटिका रवनि ॥ वन्द्यानवित् २० शुक्तिवानायामादाव वन्द्या शुक्ति सिद्धि ४
 ५ ॥ वन्दुखण्डुसस्य दूटनयाय ॥ यायमहाकाय वन्दुखण्डुसस्य वन्दु २१०० धनर्तदावयाय ॥ य

वैदधाय॥ ब्रह्मलिवद्रुत। खनन्द १० धनलागकायालदि सुकि १ नर्तका। प्रतिपदादिनठीयाव
ना धतिथिकाया। नवनका ६॥ १०॥ थकायायाव। नषसगगना १०० निध्यागुलयादावविकलानर्त
काय॥ वैदयातुद्धिससूर्ययातुकिनयायाव। नषतुकातुधाय॥ गमयविकलासतुकातुनला
याघटिविधटिशना०॥ गमयविकलासतुकातुनलागकायमदाकालदवतिथितातश
नयायाव। नषगतविकलाधाय॥ गतविलासतुकातुनलागकायालदिदवतिथिय
तिथिकदि॥ ॥ गतकमकमततुद्धिर्गमयका हनतुकिहतातुनप्री। ना